(ब) भाषा-शिक्षण एवं भाषा-विज्ञान—

भाषा शिक्षण में भाषा-विज्ञान से बहुत सहायता मिल सकती है। भाषा-शिक्षण में बहुत विद्वान स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रहे हैं। डार्नली, वेस्ट, मैके, लेडो, फ्रीज आदि विद्वानों ने भाषा ~~सिखाने~~ सिखाने की विधियों पर पाश्चिम में बड़ा काम किया है किन्तु इन्होंने भाषा-विज्ञान के किसी एक सम्प्रदाय का वर्चस्व नहीं स्वीकार किया और समाहारक दृष्टिकोण को अपनाया। अतः भाषा-वैज्ञानिकों ने इन्हें अधिक सम्मान नहीं दिया।

भाषा-विज्ञान में भाषा का विश्लेषण वैज्ञानिक ढंग से होता है और अन्य भाषा-शिक्षण में भाषा-विज्ञान ने क्रान्तिकारी सिद्धान्त दिये, किन्तु कुछ परम्परागत प्रणाली के अभ्यस्त भाषा-शिक्षक भाषा-विज्ञान को अधिक सम्मान देने के पक्ष में नहीं हैं। ये दोनों ही दृष्टिकोण ठीक नहीं हैं। भाषा-विज्ञान के निष्कर्षों से भाषा-अध्यापकों को अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

भाषा-विज्ञान अपनी प्रायोगिक पद्धति द्वारा भाषा-शिक्षण में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। प्रायोगिक पद्धति से अभिप्राय अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान से है जो प्रायोगिक-कार्य अभिमुख एक ऐसी भाषा-वैज्ञानिक स्वस्थ विधा है जो मानव कार्य-व्यापार में आने वाली भाषागत जटिलताओं एवं समस्याओं का समाधान ढूंढ़ता है। वस्तुतः भाषा-वैज्ञानिक अन्य भाषा सीखने वाले व्यक्ति या बालक की मातृभाषा एवं लक्ष्य-भाषा का व्यतिरेकी अध्ययन कर दोनों भाषाओं की व्यवस्था एवं संरचना के साम्य-वैषम्य का पता लगाता है।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तदनुरूप पाठ्य-सामग्री एवं अध्यापन बिन्दुओं का निर्धारण करता है एवं प्रयोगशाला के लिए विशेष पाठों का निर्माण करता है। इसके पश्चात लक्ष्य-भाषा की विशेषताओं को ध्यान में रखकर विशिष्ट व्याकरणिक अभिरचनाओं, शब्दों, व्याकरणिक खण्ड रचनाओं को नानाविध स्पष्ट करने हेतु सुनना, दुहराना, पहचानना, प्रतिस्थापना, रूपान्तरण, प्रश्नोत्तर आदि के माध्यम से बार-बार अभ्यास भी करता है और तदनुरूप पाठ्य-सामग्री का चयन कर पाठ्य-निर्माण भी करता है। पहले जिन विदेशी भाषाओं को परम्परागत ढंग से पढ़ने-पढ़ाने पर बालकों में लिखने एवं बोलने की अपेक्षित दक्षता लाना वर्षों के कठिन परिश्रम के बावजूद असम्भव दीखता था, उस कार्य को अनुप्रयुक्त पद्धति से भाषा-विज्ञान ने अपनी प्रयोगशालाओं में कुछ सप्ताह के शिक्षण-प्रशिक्षण से सम्पन्न कराने में पर्याप्त सफलता हासिल कर ली है।

ध्वनि (स्वन) विज्ञान —

ध्वनि-विज्ञान के अन्तर्गत मनुष्य की वागिन्द्रियों से उत्पादित स्वनों (ध्वनियों) का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन किया जाता है। इसकी मुख्यतः तीन शाखाएँ हैं :—

(1.) उच्चारणात्मक

(2.) भौतिक (ध्वनिक)

(3.) श्रवणात्मक

ध्वनि उच्चारण में प्रयुक्त होने वाले अवयव और उच्चारण प्रक्रिया का अध्ययन उच्चारणात्मक ध्वनि विज्ञान में, ध्वनि संचरण में संलग्न तरंगों का अध्ययन भौतिक ध्वनि विज्ञान या प्रसरणिक ध्वनि-विज्ञान में किया जाता है। ध्वनि अध्ययन के तीन आयामों में से एक उसका श्रवण है। श्रवण या ध्वनि के सुनाई पड़ने का सम्बन्ध हमारे कानों से है। हमारे कान ध्वनि तरंगों को ग्रहण करके उन्हें तन्त्रिका आवेग के रूप में बदल देते हैं। उन तन्त्रिका आवेगों को मस्तिष्क ग्रहण करता है।

संवाद ग्रहण की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया की जानकारी श्रवणात्मक ध्वनि विज्ञान से हमें प्राप्त होती है। सब मिलाकर ध्वनियों से सम्बन्ध रखने वाले अवयवों, ध्वनि उत्पादन की प्रक्रिया, ध्वनि लहर और श्रवण की प्रक्रिया की जानकारी स्वन (ध्वनि) विज्ञान ही देता है।

वाक्य विज्ञान — (Syntax)

भाषा संरचना की दृष्टि से वाक्य भाषा की एक महत्वपूर्ण इकाई है। वाक्यों का अध्ययन वाक्य-विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। सामान्यतया वाक्य-विचार हेतु अध्ययन की तीन दिशायें निर्धारित की जा सकती हैं —

(1) समकालिक

(2) ऐतिहासिक

(3) तुलनात्मक

आधुनिक भाषा-विज्ञान में वाक्यों का व्यतिरेकी अध्ययन भी आरम्भ हो चुका है जिसमें किन्हीं दो भाषा के वाक्यों में

विरोधी तत्वों का प्रकाशन व्यतिरेकी पद्धति से किया जाता है। समकालीन भाषा या भाषाओं के वाक्यों का अध्ययन समकालिक या एककालिक पद्धति से किया जाता है। समय के विभिन्न अवधि कालों में किसी भाषा के वाक्यों की रचना, गठन आदि में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है, जैसे सन्दर्भों का अध्ययन ऐतिहासिक पद्धति में तथा तुलनात्मक पद्धति के अन्तर्गत किन्हीं दो या दो से अधिक भाषाओं के किसी एक काल के वाक्यों की रूप रचना एवं गठन आदि के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाता है।

वस्तुत: वाक्य विज्ञान में पद-विन्यास, प्रकार, अन्वय केन्द्रिकता, ध्वन्यात्मक या स्वरात्मक आपरिवर्तन, आन्तरिक तथा बाह्य संरचना, रूपान्तरण आदि का अध्ययन किया जाता है।

पद-विज्ञान — (Morphology)

वाक्य की रचना पदों से होती है। वस्तुत: वाक्य जिन सार्थक लघुतम इकाइयों में विभाजित हो सकता है, उन्हें ही पद माना जाता है। वास्तव में शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की प्रयोगार्हता प्राप्त कर लेता है तो वह पद बन जाता है। उदाहरण के लिए 'वह घर गया' वाक्य में तीन पद हैं। लेकिन वाक्य से इनको अलग कर देने पर ये तीनों पुन: शब्द की कोटि में चले जायेंगे, क्योंकि तब इनका कोशीय सन्दर्भ ही अवशेष बचेगा। पद विज्ञान के अन्तर्गत रूपों की रचना, पदों के प्रकार, रूपात्मक प्रक्रिया, अर्थ तत्व एवं सम्बन्ध-तत्व या विभक्ति आदि का विवेचन किया जाता है। इसके अन्तर्गत ही शब्दों की निष्पत्ति में प्रकृति एवं प्रत्यय के योगदान की भी चर्चा की जाती है। यथा 'हृ' धातु में 'घञ' प्रत्यय जोड़ने से हार शब्द निष्पन्न होता है

और 'प्र' 'उप' 'सम' 'वि' आदि उपसर्गों के योग से क्रमशः प्रहार, उपहार, संहार, विहार शब्द बनते हैं जो अर्थ एवं स्वरूप दोनों में ही एक दूसरे से भिन्न हो जाते हैं इन शब्दों में विभक्ति प्रत्यय जोड़कर व्याकरणिक अर्थों की सिद्धि की जा सकती है। इसीप्रकार 'पद' से 'पढ़ना' शब्द बनता है जिसमें विभक्ति प्रत्ययों को जोड़कर व्याकरणिक अर्थों की सिद्धि हेतु 'पढ़ता', 'पढ़ते' 'पढ़' आदि कई रूप निष्पन्न हो सकते हैं।

पद विज्ञान के अन्तर्गत पद के स्वरूप एवं उसकी रूप रचना का अध्ययन किया जाता है। इसीलिए इसे 'रूप विज्ञान' भी कहते हैं।

अर्थविज्ञान – (Semantics)

प्राचीन काल से ही अर्थ के महत्व को स्वीकार किया गया है। भारत में अर्थ के अध्ययन का विधिवत आरम्भ यास्क से माना जाता है। अर्थ के महत्व को रेखांकित करते हुए यास्क ने कहा है, "जिसप्रकार बिना अग्नि के शुष्क इंधन प्रज्वलित नहीं हो सकता उसी प्रकार बिना अर्थ समझे जो शब्द दुहराया जाता है वह कभी अभीप्सित अर्थ को प्रकाशित नहीं कर सकता।"

ध्वन्यात्मक प्रतीकों से जो प्रतीति होती है, उसे ही अर्थ कहते हैं। अर्थ विज्ञान के अन्तर्गत इसी अर्थतत्व का का विवेचन किया जाता है। ध्वनि एवं अर्थ का सम्बन्ध अर्थ-निर्धारण, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशा, अर्थ की संरचना आदि का व्यवस्थित विवेचन इसी शाखा के अन्तर्गत किया जाता है। 'भद्र' शब्द से निष्पन्न 'भद्दा' एवं 'भला' तथा 'वत्स' से निष्पन्न 'बच्चा' और बछड़ा के अर्थ में इतना अन्तर कैसे हो गया? 'मृग'

शब्द जो पशु मात्र का बोधक था वह केवल 'हिरण' के अर्थ तक क्यों सीमित हो गया? 'तिल' से निकलने वाला द्रव यदि 'तेल' था तो किसी भी पदार्थ से निकला स्नेहिल तरह पदार्थ 'तेल' का वाचक कैसे बना? आदि शंकाओं का समाधान अर्थविज्ञान ही करता है।

वास्तव में अर्थ के अभाव में भाषा का कोई महत्व ही नहीं। वस्तुतः अर्थ क्या है? अर्थ की जानकारी कैसे होती है? शब्द और अर्थ में क्या सम्बन्ध है? अर्थ में परिवर्तन क्यों और कैसे होता है? आदि विषयों पर विचार अर्थ-विज्ञान के अन्तर्गत ही होता है। कुछ लोग अर्थविज्ञान को भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत स्थान देते हैं और कुछ लोग भाषा-विज्ञान की सीमा से इसे बाहर रखने की वकालत करते हैं।

भाषा शिक्षण एवं उच्चारण

हिन्दी भारत के विशाल भू-भाग में बोली और समझी जाती है। राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के निवासियों की यह मातृभाषा है। इसका क्षेत्र इतना व्यापक है कि बोलने वालों में स्थानीय प्रभाव आ जाना स्वाभाविक है। क्षेत्र-भेद के कारण उच्चारण भेद आ जाता है। क्षेत्र-विशेष के रहने वालों के लिए हिन्दी का उनका अपना उच्चारण बोली से प्रभावित हो सकता है। ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी क्षेत्रों के लोग यदि अपने ठेठ लहजे में बोलें तो वे एक दूसरे को

कठिनाई से समझ पायेंगे। ब्रज और अवधी में 'श' की ध्वनि नहीं है। सभी शकारयुक्त शब्दों का उच्चारण वहाँ सकारयुक्त हो जाता है। शाप, सकुन, पाठशाला, शंकर आदि का उच्चारण वे सराप, सकुन, पाठसाला और संकर के रूप में करते हैं, किन्तु ये उच्चारण शुद्ध नहीं कहे जा सकते।

शुद्ध उच्चारण का महत्व — किसी भी भाषा में उच्चारण का अत्यधिक महत्व होता है। भाषा सीखने और सिखाने में उच्चारण की अशुद्धियाँ बहुत बाधक होती हैं। शुद्ध उच्चारण ही भाषा-विशेष के ज्ञान का प्रथम चरण होता है। हिन्दी भाषा उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है और इसके राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होने के पश्चात् इसका महत्व और भी बढ़ गया है। इसलिए इसे शुद्ध, समृद्ध, सर्वप्रिय तथा सर्वग्राह्य बनाने के लिए उच्चारण की शुद्धता की ओर ध्यान देना परमावश्यक है। बहुधा देखा गया है कि शुद्ध उच्चारण न कर सकने के कारण हम उपहास-पात्र बन जाते हैं। उदाहरणार्थ - यदि कोई व्यक्ति "मैं स्टेशन पर शास्त्री जी को छोड़ने जा रहा हूँ" के स्थान पर "मैं स्टेसन पर सास्त्री जी को छोड़ने जा रघा हूँ" कहे तो यह वाक्य कर्णकटु प्रतीत होता है।

भारत-विभाजन के पश्चात कुछ अहिन्दी-भाषी प्रान्तों के लोग भी हिन्दी-भाषी राज्य में आकर बस गये हैं। ये लोग अपनी प्रान्तीय भाषाओं के प्रभाव के कारण हिन्दी का शुद्ध उच्चारण करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इसलिए उच्चारण पर विचार करते समय भारत के सभी भागों के निवासियों के उच्चारण को ध्यान में रखा गया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी पर अन्य भाषाओं के प्रभाव को भी ध्यान में रखा गया है।

उच्चारण में दोष — प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के बालक अधिकतर निम्न प्रकार की अशुद्धियाँ करते हैं:—

१- वर्णमाला में क के उच्चारण में 'अ' को 'आ' या 'अं' बोलते हैं।

२- शब्द के अन्त में लिखते 'इ' हैं और कहते हैं 'ई' हैं।

जैसे शान्ति को शान्ती ।

(2-) शब्द के अन्त में लिखते 'उ' हैं और बोलते 'ऊ' हैं ।
जैसे - 'किन्तु' को 'किन्तू' और 'मनु' को 'मनू' ।

(3-) 'ऋ' लिखकर 'र' पढ़ते हैं और वृक्ष को व्रक्ष बोलते हैं ।

(4-) लिखते 'ओ' हैं और बोलते 'औ' हैं ।
जैसे - 'गोशाला' को 'गौशाला' ।

अशुद्ध उच्चारण के कारण — बालों के उच्चारण में अनेक दोष आ जाते हैं और वे अशुद्ध उच्चारण करने लगते हैं। अशुद्ध उच्चारण के प्रायः निम्नलिखित कारण होते हैं :—

(1-) ध्वनि-लोपन - किसी ध्वनि का लोप कर देना ।

(2-) ध्वनि-विकृति - किसी ध्वनि का अल्प-उच्चारण या अति उच्चारण करना ।

(3-) ध्वनि-विपर्यय - किसी ध्वनि को उलट-पलट देना ।

(4-) ध्वनि का सही ज्ञान न होना ।

(5-) उच्चारण के साधारण नियमों का ज्ञान न होना ।

(6-) सुर, अनुतान, बलाघात आदि का अनुचित प्रयोग ।

(7) हकलाना या तुतलाना ।

(8-) दोषयुक्त श्रवण प्रक्रिया (कम सुनना) ।

(9-) कुछ अन्य शारीरिक विकृतियाँ - जैसे- ओष्ठ-विकृति, दन्तक्षय, कोमल तालु अभाव, कालत्व अभाव या लघुत्व ।

(10-) स्थानीय बोलियों का प्रभाव ।

(11-) शब्द लाघव की प्रवृत्ति ।

(12-) अध्यापक द्वारा निर्देशन की कमी ।

सुधार के उपाय (निदान) — यदि अध्यापक निम्नलिखित उपाय कर लें तो बालों के उच्चारण सुधार सकते हैं :—

(1-) उच्चारण सुधार का प्रयास प्रारम्भिक स्तर से ही होना चाहिए

(1-) प्रारम्भ में उच्चारण अशुद्ध हो जाने पर बाद की कक्षाओं में सुधारना कठिन हो जाता है।

(2-) जिन बालों का उच्चारण अशुद्ध हो उनका अनुकरण अन्य बालक न करने पाये।

(3-) मौखिक कार्य का उच्चारण सुधार में विशेष महत्व है। अतः कक्षा में मौखिक कार्य के पर्याप्त अवसर प्रदान किये जायें।

(4-) यदि संकोच, डर या आत्मविश्वास की कमी के कारण उच्चारण अशुद्ध हो रहा है तो अध्यापक को चाहिए कि बालक के प्रति सहानुभूति एवं धैर्य के साथ व्यवहार करे।

(5-) बालों में शुद्ध उच्चारण करने की आकांक्षा जागृत की जाय। उन्हें परिनिष्ठित उच्चारण करने के लिए प्रेरित किया जाए।

(6-) अध्यापक अपने उच्चारण भी सुधार लें। उच्चारण-शिक्षा में अनुकरण का विशेष महत्व है।

(7) साधारणतया अशुद्ध उच्चारण की जाने वाली ध्वनियों की सूची बनाकर प्रत्येक वर्ष के आरम्भ में उच्चारणाभ्यास करा लिया जाया करे।

(8-) उच्चारण-प्रतियोगिताओं का आयोजन कोई पुरस्कार की व्यवस्था की जाय।

(9-) आवश्यकता हो तो चिकित्सकों की सहायता ली जाये।

(10-) उच्चारण के कतिपय नियमों का बालों को ज्ञान करा देना चाहिए।